यषस्वी बनों-तपस्वी बनो

कीर्ति-प्रसिद्धि के लिये पराश्रित होना पड़ता है। यष में नितान्त स्वाभाविकता है। न कीर्ति कर्ताओं की जरूरत,न ही अलंकारों का आधार। कीर्ति मोहताज है तो यष निर्बाध। प्रषंसकों द्वारा जहाँ कीर्ति सुषोभित होती तो विरोधियों द्वारा उसे दूशित भी किया जा सकता है। यष, विज्ञापन-निन्दक-बाधक सबसे मुक्त है। कीर्ति को निन्दा का डर रहता, पोल खुलने का भय बना रहता है। यष आत्मनिर्भर, सहज-स्वाभाविक होने से किसी से भी नहीं डरता है। कीर्ति सीमित परन्तु यष व्यापक है। मनस्वियों के लिये यष ही जीवन है। जो यष की कामना करते उनमें ही दिव्यगुणों की धारणा होती है। यष की प्राप्ति तपोमय जीवन से होती है। बाबा षिव स्वरूप के द्वारा हमें तपस्वी बनाकर के यषस्वी बनाना चाह रहा है।
परन्तु तप-साधना की निरन्तरता से ही जीवन कुन्दन की तरह मँहकता है।

चन्द्रमा अपनी निज चाँदनी से किस प्रकार अंधियारे को सुप्रकाषित कर देता है। कौन है जो निष्छल चन्द्रमा की पोल खोलेगा ? उसकी अमृतमयी चाँदनी से ही संसार जीवन्त बना हुआ है। वह सारे विष्व में अमृत की बरसात करता रहता है। सभी को सुख देता है। कौन है जो उससे लाभान्वित नहीं है ? कौन है जो उसके मनोहारी स्वाभाविक चान्द्रिका पर मुग्ध नहीं होता ? वह किसी के भी साथ पक्षापात नहीं करता है। उसके लिये कोई भी पराया नहीं सभी अपने हैं। वह कौन सा स्थान है जहाँ उसका यषोगान नहीं होता है ? अपने सर्व हितकारी गुणों से वह सर्व का प्यारा है। आकाष को भी देख लीजिये वह असंख्य ग्रह-नक्षत्रों से सदा जगमगाता है। कौन है जो दिव्य आकाष की दीप्ति से मुग्ध नहीं होता है ? वह कौन सी जगह है जहाँ आकाष की यष पताका नहीं फहरती है ? अपने सर्वव्यापी गुणों से वह सर्व का परम हितैशी बना ही रहता है। वह सबका है सबके लिये है इसलिये उसका यष सदा विद्यमान है। हमारी कामना बनी रहनी चाहिये कि हम भी आकाष की तरह उच्च-उज्जवल व्यापक तथा पृथ्वी की तरह सहनषील, सर्वपोशक और सर्व का आश्रयदाता बनूँ।

पृथ्वी अपनी प्रेममयी ममता की गोद में मानव-दानव, पषु-पंक्षी, कीट-पतंगे सभी की पालना-पोशणा करती है। इसीलिये उसे धरती माँ कहते हैं। कौन है जो पृथ्वी से लाभान्वित नहीं है ? वह कौन सी जगह है जहाँ पृथ्वी का यष नहीं है ? अपने पालनहार स्वरूप से पृथ्वी समान रूपेण सभी को प्यारी है इसीलिये सदा यषस्विनी है। सूर्य को लीजिये सम्पूर्ण मण्डल में वह प्रकाषमान है। सभी को स्वयं में आकृश्ट किये हुये है। उसके उदय होते ही सभी के सभी अपने-अपने कार्य व्यवहार मे जुट जाते हैं। उसके अस्त होते ही सभी विश्रामावस्था में चले जाते हैं। कौन है जो उसकी जीवनदायिनी किरणों से लाभान्वित नहीं है ? वह कौन सा स्थान है जहाँ सूर्य का यष नहीं है ? कौन है जो उससे परिचित नहीं है ? अपने विष्व हितकारी गुण से वह सबका समान रूप से प्यारा है। वह सब का है, सबके लिये इसीलिये यषस्वी है। सदा अभिलाशा बनाये रखिये कि सूर्य की तरह प्रखर और ओजस्वी बनूँ।

एशणा तामसी, कीर्ति राजसी पर यष सात्विक और स्वाभाविक है। तामसी लोग लोकेशणा चाहते राजसी लोग कीर्ति चाहते पर सात्विक लोग यषस्वी होते हैं। लोकेशणा मर जाती, कीर्ति मिट जाती पर यष सदा अमर रहता है। सात्विक सत्व वाले निश्काम कामना रखते हैं। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि-आकाष जैसे अपने स्वाभाविक गुणों के कारण यषस्वी हैं। वैसे ही मैं भी स्वाभाविक सर्वहितकारी गुणों के कारण सार्वभौम सेवाओं के द्वारा यषस्वी बनूँ। सूर्य-चाँद की तरह यष पुंज हो जाऊँ। सम्पूर्ण ऐष्वर्यों का यष मुझे प्राप्त हो। दीन-हीन-ऐष्वर्य विहीन कभी न होऊँ। ऐष्वर्यषाली बनकर मैं महादानी-परोपकारी बनूँ। अन्तिम ष्वासों तक यष मेरा साथ निभाये। सोते-जागते मेरी यष-पताका फहराती रहे। प्यारी से प्यारी चीज छूट जाये परन्तु यष कभी भी साथ न छोड़ै। प्रत्येक क्षेत्र में मुझे यष प्राप्त होता रहे।

मैं जहाँ भी बोलूँ यषस्वी बक्ता बनूँ। मेरे प्रवचनों की संसार में धूम मच जाये। सुनकर लोगों की काया पलट हो जाये। मेरी वाणी से विष्व उत्कृश्ट बन जाये। जहाँ भी बोलूँ यषस्वी वक्ता सिद्ध कर सकूँ। यष की कामना ही मानव को देव मानव बनाती है और ऊँचा भी उठाती है। भगवान धरा पर अवतरित होते तो वे भी अपना यषोगान करते हैं। सभी के
सभी ने अपने यष का स्तवन किया है। परमात्मा सदा यष स्वरूप है तो सारी प्रकृति यषोमयी है। अपने में ही अपने यष को सम्पादित करके स्वयं का यषोगान करिये। यषहीन जीवन जीवन नहीं। परन्तु इसके लिये परमात्मा द्वारा बताये हुये पाँचों स्वरूपों में स्थित होने का अभ्यासी बनना पड़ेगा। पहला स्वयं को ज्योर्तिबिन्दु परम सुखदायी स्वरूप अपनाना होगा दूसरा स्वयं के देवी-देवतायी स्वरूप को मन-बुद्धि में समाना होगा। तीसरा अपने पूजनीय-बन्दनीय रूप को स्वीकार करके उसी के लायक बनाना होगा। चौथा ब्राह्मण चोटी के संस्कारों को अपनाना होगा। पाँचवाँ फरिष्ता अर्थात् जिसका देह और देह की दुनियाँ से कोई रिष्ता, नाता नहीं। बल्कि मेरा तो एक षिव बाबा दूसरा ना कोई की स्मृति से सूर्यवंषीय यषस्वी, तेजस्वी और तपस्वी स्वरूप अपनाकर विष्व कल्याणकारी उमंगों-तरंगों में सदा लहराना होगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com